महर्षि पतञ्जलि :- समय : 200 ई० पू०

पतञ्जलि प्राचीन भारत के एक मुनि थे जिन्हें संस्कृत के अनेक महत्वपूर्ण ग्रन्थों का रचयिता माना जाता है। इनमें से योगसूत्र उनकी महानतम रचना है जो योगदर्शन का मूलग्रन्थ है। इनका व्याकरण में सबसे महत्वपूर्ण योगदान 'महाभाष्य' है, जो उन्होंने पाणिनि के 'अष्टाध्यायी' पर लिखा था। इस महाभाष्य में उन्होंने कात्यायन के वार्तिकों को भी शामिल किया और यह संस्कृत व्याकरण के क्षेत्र में एक मौलिक और प्रभावशाली ग्रंथ है। यह न केवल व्याकरण के सूक्ष्मातिसूक्ष्म नियमों का विश्लेषण करता है, बल्कि तत्कालीन समाज का एक विश्वकोष भी है।

महर्षि पतञ्जलि का व्याकरण में योगदान :-

- **महाभाष्य की रचना :**
पतञ्जलि ने लगभग ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी में 'महाभाष्य' की रचना की, जो पाणिनि के 'अष्टाध्यायी' पर एक विस्तृत भाष्य है।
- **कात्यायन के वार्तिकों को समाहित किया :**
इस ग्रंथ में कात्यायन के वार्तिकों को भी उद्धृत किया गया है, जिन्हें पतञ्जलि ने अपने भाष्य में शामिल किया। ये वार्तिक ~~यहीं~~ कहीं और नहीं मिलते हैं, इसलिए महाभाष्य इनकी उपलब्धता का एकमात्र स्रोत है।
- **व्याकरण के तीनों अंगों का विवेचन :**
महाभाष्य में न केवल व्याकरण (व्याकरण और रूप-रचना) बल्कि शिक्षा (ध्वनि विज्ञान और उच्चारण) और निरुक्त (शब्द-व्युत्पत्ति) जैसे व्याकरण से संबंधित विषयों की भी चर्चा हुई है।

Page No. ________
Date ________

- <u>व्याकरण की प्रामाणिकता पर मुहर :</u>
  महाभाष्य ने पाणिनि की व्याकरण प्रणाली को अंतिम प्रमाणिकता प्रदान की और इसे संस्कृत भाषा विज्ञान में एक आधारशिला माना जाता है।
- <u>स्फोटवाद का दार्शनिक सिद्धांत :</u>
  महाभाष्य में, पतंजलि ने 'स्फोटवाद' नामक एक दार्शनिक सिद्धांत की नींव भी रखी जो मानते हैं कि शब्द स्वयं ही सृष्टि का मूल कारण है।
- <u>समाज का प्रतिबिंब :</u>
  व्याकरणिक विश्लेषण के साथ-साथ महाभाष्य तत्कालीन समाज और जनजीवन का भी विस्तृत विवरण प्रस्तुत करता है, जिससे यह व्याकरण का ग्रंथ होने के साथ-साथ उस युग का एक विश्वकोष भी बन जाता है।